—:जै श्री राम:—

अछूतों का बेताज बादशाह

(लेखक:)

गोर्धनसिंह बिहारीलाल शाहदरा

(सूबा देहली)

—:प्रकाशक:—

चौधरी किशनलाल व बुधाराम शाहदरा

सन १९५६

प्रथम बार २०००

मूल्य -)

शैर

सत्य का दीपक सदा संसार में जलता रहे।
न्याय का आरा सदा अन्याय पर चलता रहे॥
दृढ़ है इक़बाल खुदगर्जी क्या दुश्मन कर सके।
धर्म का डण्डा पाप के सीस पर बजता रहे॥

ख्याल

नवयुवक क़ौम के जुट जावें सब मिलकर क़ौम परस्ती में।
जय भीम के नारे लगा करें भारत की बस्ती २ में॥

(चौक १)

न्यारा तारों में इक़लाहल झंडे का चिन्ह हमारा हो।
झन्डे का डन्डा ऊंचा हो पब्लिक का फाफो लारा हो॥
हर मनुष्य क़ौम का बढ़ करके इस तरियों से ललकारा हो।
हम आदि निवासी भारत के ये बुलन्द हमारा नारा हो।
कमजोरी दिल से दूर करो आ जाओ असली हस्ती में॥

(चौक २)

अपने ही बाग़ बगीचे हो अपनी ही खेती क्यारी हो।
अपने ही चौधरी मुखिया हों अपनी ही नम्बरदारी हो॥
अपने ही कानूगो बने और अपना ही पटवारी हो।
तीनों बल जब अपने हों तो क्यों ना विजय हमारी हो।
सब भूमी पर अधिकार रहे क्या महंगी और क्या सस्ती में॥

(चौक ३)

नवयुवक उठो और कमर कसो कुछ करलो काम जवानी में।

करने से सब कुछ हो सकता अच्छा अन्जाम जवानो में ॥
कुछ करके ही हासिल होता मरदों का नाम जवानी में ।
खुदगर्जों को मिलकर दे दो अपना पैगाम जवानी में ॥
सब जोर लगाओ एकदम से अपनी इस कौमी कश्ती में ॥

(चौक ४)

स्कूल और कोलिज अपने हों जब अपना जमा खजाना हो ।
अपने ही मास्टर टीचर हों क्यों ना अज्ञान रवाना हो ॥
उन्नति चरण चूमें उनके जहां पढ़ना और पढ़ाना हो ।
अपने हों पंडित उपदेशक जाति माता का गाना हो ॥
जज्बात कौम के उठते हों सन्यासी और ग्रहस्थी में ॥

(चौक ५)

अपने पैरों पर उठो अगर तुम को इन्सान कहाना हो ।
जो जवां मरद बन कर चलता उसके ही साथ जमाना हो ॥
जो एक२ रुपिया जमा करो दस करोड़ से अधिक खजाना हो ।
दो चार वार में बन सकता और तुम को किला बनाना हो ।
सब दुनियां वाले अड़े हुए हैं देखो कौमी मस्ती में ॥

(चौक ६)

जै सदा बदलती आती है जै होती चलती बातों की ।
देखो इतिहास उठा करके नाना प्रकार मिसालों की ।
बलिदान कौम पर जो होते लेते बौछार जबानों की ।
जै क्यों ना हो उनकी जग में निज जाति के मतवालों की ।
बहुतों ने बुलवाई लोगो अपनी जै जोरा जस्ती में ॥

(चौक ७)

बल वालों की दुनियां लोगो यह दुनियां ना कमजोरों की।
तन बल धन बल विद्या बल की ना है यह काले गोरों की।
तीनों बल हासिल कर लो अब सोइबत तजो छछोरों की।
उठना है तो उठ कर आओ क्यों आशा करो औरों की।
अब सोने का समय नहीं ना काम चलैगा सुस्ती में ॥

(चौक ८)

जिस हिन्द पर दुनियां लड़तो है यह हिन्द हमारे बाबा का।
हकदार वही हो सकता है जो बिन्द हमारे बाबा का।
पावेगा इस में वही बशर फरजन्द हमारे बाबा का।
इस का चैलंज मिल कर दे दो जो जिन्द हमारे बाबा का।
कब तक फितनागर काम करेगा इस चालाकी चुस्ती में ॥

(चौक ९)

खुद गारज लुटेरों ने लूटा उनको चैलंज हमारा हो।
अब मिले मसक्कत से रोटी इस तरयों नहीं गुजारा हो।
सब से पहले हम बाशिन्दे यूं भारत देश हमारा हो।
गये बीत हजारों वर्ष हमें अब तो हम को छुटकारा हो।
कमजोर बना हम को डाला अब मीग रही ना अस्ती में ॥

(चौक १०)

बातों से काम चलेगा ना बातों पर मिटने वाले हो।
एक बात २ की बातों में बातों में उठने वाले हो।

हर काम काज के लिए बात बातों में जुटने वाले हो।
गुरु बशीराम मुसाफर कहे बातों पर मिटने वाले हो।
गोधंन बिहारी लिखे करारी आकर कौमी मस्ती में।
जय भीम के नारे लगा करें हर भारत की बस्ती २ में॥
दोहा—एक जमीदार के काम पर लगे कमेरे चार।
उन चारों के साथ में लगा हुआ परवार॥

भजन

टेक—एक रुपये में जमीदार के सोलह आदमी भरती।
रोजाना भूखे मरते मुझे कहे बिना ना सरती॥

कली

आठ आने में चारों भाई लगे हुए थे हाली।
चार आने में गोबर पाथे चारों की घर वाली।
तीन आने में चारों के सुत ढोरों पे थे पाली।
एक आने में चारों लड़की रोटी देने वाली।
फिर भी गाली जमीदार दे थोड़ी जोती धरती॥

कली

गोबर पाथ पीसना पीस्सें घर की करें सफाई।
जंगल सेती न्यार काट कर लाती उनकी व्याही।
ढोरों के नीचे सूखा करने को रेता लाई।
हो गई थोड़ी देर फेर यों घर वाली घुरराई।
उन्हे हरामड़ कहके बोली ठीक काम ना करती॥

कली

तन पै बस्तर नहीं चरण नंगे से आये पाली ।
न्यार फूंस कर शाम हुई जब घर पे आये हाली ।
रोटी खाने लगे कहन लगी चारों की घर वाली ।
हम से तो इस जमीदार की सुनो जाय ना गाली ।
म्हारी कुटम्बड़ी रात दिना सब इसी काम में मरती ।

कली

अगले दिन फिर जमीदार से चारों बोले हाली ।
भूके प्यासे हल जोतें तेरी खायं रोज की गाली ।
तीस रुपये में सोले आदमी लग रहे हाली पाली ।
तू तासे तेरे घरके तासें खोटी कहें घर वाली ।
गोर्धन बिहारी लिखे करारी यू के नैम कुदरती ॥

भजन

भारत के नर नारी अपनी अपनी तान में ।
जने किस की तान बजेगी लोगो हिन्दुस्तान में ॥
हिन्दू यूं रहे पुकार हम हैं इस भारत के सरदार ।
सब हकों के हैं हकदार और को आन कान में ।
और की चिन्ता नहीं लगे हैं अपने ध्यान में ॥१॥
कहीं पर इस्लामी कहते हैं हम भी भारत में रहते हैं ।
दुखड़े हम सहते हैं जो हामी कुरान में ।
मुस्लिम भी खुश यारो अपने पाकिस्तान में ॥२॥
सिक्ख यूं कहने लगे अकाली हमारे गुरु की रीत निराली ।

बजने दो हमारी ताली अपने सिक्खस्थान में।
नहीं बादशाह से जा कर कह दें इंगलिस्तान में ॥३॥
अब अछूतों की रही बारी बात कोई सुनता नहीं हमारी।
गोर्धन बिहारी लिखें करारो ख़ुशी अछूत स्थान में।
नन्दराम सिंह खुश रहता अपने गुरु के ज्ञान में ॥४॥

दोहा

संगठन शक्ति कलियुग में बतलाई गई ।
और शक्ति संगठन की दास कहलाई गई ॥

भजन

विजय की जय के कारण रक्त की नदी बहाई है।
समझ ला सोच लो डन्डे की जय ही होती आई है ॥
उठा कर जय के मस्ले को लोग तिब्बत से आये थे।
सिर्फ़ जय ही के कारण जात यहां आकर बनाई है ॥ १ ॥
बताते पूज्य ब्राह्मण को क्यों रावण राम ने मारा।
ब्राह्मण घात करके ही राम ने जय बुलाई है ॥ २ ॥
राज में राम के शम्बुक जपे था नाम ईश्वर का।
नहीं जय राम की बोली जान उसकी गंवाई है ॥ ३ ॥
जलम क्या हिरनाकुश ने कर दिया था राज में अपने।
बुलाता अपनी ही जय था तो क्या कीनी बुराई है ॥ ४ ॥
बना कर स्वांग नरसिंह का क्यों हिरनाकुश को मारा था।
बने अपस्वार्थी सब हा पोल कैसी बनाई है ॥ ५ ॥

करारी गोर्धन बिहारी लिखे एक जय है इन्हें की।
कहीं जय शोभा जी की है कहीं प्रताप गाई है ॥ ६ ॥

ग़ज़ल

पस्त क़ौम ऐसी सताई हुई है
ये चारों तरफ़ से दबाई हुई है ॥
खुद गर्ज़ नाकों ने पकड़ा जकड़ के।
सभी चौंच सब ने धसाई हुई है ॥ १ ॥

हड़प कर लिये हैं करोड़ों वज़र तो।
यही ताक़तें यह बढ़ाई हुई है ॥ २ ॥

इन्होंने बनाया है धनवान सब को।
मगर आप भूखों में आई हुई है ॥ ३ ॥
इन्होंने पढ़ाया कमाई खिला कर।
मगर आप मूर्ख कहाई हुई है ॥ ४ ॥

इन्हों ने जगाया है सोते हुओं को।
इन्हें नींद कैसी अब छाई हुई है ॥ ५ ॥
संभल जा यूं गोर्धन बिहारी पुकारें।
क्यों अब तक ना इनकी सुनाई हुई है ॥ ६ ॥

आपके शुभचिन्तक
गोर्धनसिह विहारीलाल
शाहदरा सूबा देहली

दयानन्द शास्त्री के प्रबन्ध से
मर्यादा प्रेस, बाग दीवार, देहली में छपा।